दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-7
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

DTVF / OPT-23 **HL-2307**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Praduman Kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03/07/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	1	4	9	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राम नाम के पटंतरै, देबे कौं कुछ नाहिं।

क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माहिं।।

सदर्भ/प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियाँ भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के शिरोमणि कवि कबीरदास जी का है जिसका संकलन श्यामसुन्दर दास ने कबीर ग्रंथावली में किया है। तथा यह 'गुरु के अंग' से ली गई पंक्तियाँ है जो गुरु महत्व को दर्शाती है।

व्याख्या - कबीरदास गुरु का महत्व बताते हुए कह रहे कि राम नाम को रटते रटते इतना समय हो गया है किन्तु राम कभी दिख नहीं रहे है अर्थात उनकी प्राप्ति नहीं हो रही है फिर गुरु के द्वारा वो राम नाम का भजन करते है। जिससे उन्हें निर्गुण राम की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अनुभूति होती है

काव्यगत सौंदर्य - भाषा - सधुक्कड़ी
↳ पंचमेल खिचड़ी

छंद - दोहा

गेयता, संगीतात्मकता है

काव्यरूप - मुक्तक

विशेष

•) भक्ति मार्ग को सहज करते हेतु राम नाम का प्रयोग किया है

•) इसमें कबीर पर वैष्णव भक्ति का प्रभाव दिखते है ।

•) गुरु को साधना के मार्ग में आवश्यक अनिवार्य मार्गदर्शक माना है

~~प्रासं~~ **प्रासंगिक** - वर्तमान समय में जब गुरु का महत्व घटता जा रहा है कबीर की ये पंक्ति गुरु महत्व को बढ़ावा देती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न मिटै भवसंकट, दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिराग, न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ जटो।
नट ज्यों जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसिबासर राम रटो।।

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल की राम ~~सत्~~काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसी की "कवितावली" से ली गई है जिसमें तुलसी जी अपने आराध्य राम की भक्ति कर रहे है

व्याख्या - तुलसीदास राम भक्ति को श्रेष्ठ मानते है तथा वह कह रहे है यदि जीवन में संकट से बचना है तो तीरथ जाने या आडम्बर करने से कुछ प्राप्त नहीं होगा, यदि जीवन में सुख चाहते हो एकमात्र मार्ग है कि प्रतिदिन राम का नाम रटते रहे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्यगत सौंदर्य

भाषा - परिष्कृत ब्रजभाषा

छन्द - चौपाई,

गेयात्मकता, गीतात्मकता है

अलंकार - रूपक,

काव्यरूप - प्रबंधकाव्य,

विशेष

•) वैष्णव भक्ति का प्रभाव तुलसीदास पर है तथा वे अपने आराध्य राम की भक्ति कर रहे है।

•) तुलसी कवितावली में ब्रजभाषा का उपयोग किया जबकी रामचरितमानस अवधी में लिखी है।

प्रासंगिकता - वर्तमान समय में जब संसार ईश्वर से दूर जा रहा है तब ईश्वर भक्ति को सहज जगाने के लिये तुलसीदास का पाठ जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

संदर्भ / प्रसंग - दिया गया व्याख्येय उद्धरण ओज के कवि रामधारी सिंह दिनकर की कृति कुरुक्षेत्र से ली गई है। जिसमें दिनकर जी ने युद्ध दर्शन को दिखाया है तथा मार्क्सवादी विचार के कारण हिंसा को स्वीकृति दी है।

व्याख्या - दिनकर जी ने पौराणिक आख्यान रूप में कुरुक्षेत्र में भीष्म एवं युधिष्ठिर संवाद को दिखाया है कि युद्ध करने से पाप नहीं लगता है ना ही यह कोई अन्याय है बल्कि यह तो जीवन की सार्थकता है और यदि युद्ध के समय में तुम युद्ध को छोड़ते

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की बात करोगे तो यह अधर्म एवं पाप है।

काव्यगत सौंदर्य

भाषा- खड़ीबोली, ओजस्वी भाषा
संगीतात्मकता, लयात्मकता है
काव्यरूप - विचार प्रधान लम्बी कविता

विशेष

- गांधीवादी अहिंसा का सीमित विरोध दिखता है।
- मार्क्सवाद का प्रभाव है जो कि समाजवादी व्यवहारिक मन के प्रतीक है।
- युद्ध दर्शन प्रतिपादित हुआ है।

प्रासंगिक : वर्तमान के ~~मध्यकाल~~ मध्यवर्ग को जो तटस्थता बरता है उसे अन्याय के विरुद्ध खड़े रहने की प्रेरणा देते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नहि परागु, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगै कौन हवाल।।

संदर्भ/प्रसंग - दिया गया दोहा रीतिकाल के शिखर रचनाकार कवि बिहारी है जो उनकी एकमात्र कृति "बिहारी सतसई" से लिया गया है। जिसमें बिहारी अपने बदले तेवर के साथ राजा पर राजनीतिक व्यंग्य करते है।

व्याख्या - इस दोहे के दो अर्थ है जिनमें से एक राजनीतिक है। बिहारी एक राजा को कह रहे है कि तू अपनी रानी पर मद मुग्ध हो गया है जबकि वह अभी तो पूर्ण रूप से यौवन से भरी भी नहीं है जब वह यौवन से भर जायेगी तब तेरा क्या होगा तू तो राजपाट छोड़के रानी के संयोग एवं यौवन रस में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डूबा रहेगा।

काव्य सौंदर्य

भाषा - ब्रजभाषा (परिनिष्ठित)
अलंकार - रूपक, उत्प्रेक्षा
छन्द - दोहा
काव्यरूप - मुक्तक
रस - श्रृंगार

विशेष

- बिहारी राजनीति रूप से सक्रिय रूप धारण किये हुये हैं इस दोहे में।
- श्रृंगार रस का सुन्दर प्रयोग किया।
- राजपाट के प्रति जबाबदेही बरतने की सलाह देते हैं।

प्रासंगिक - वर्तमान समय के राजनेता जो अपने सामाजिक कार्य से विमुख हो गये हैं उन्हें पाठ पढ़ाने के लिये यह जरूरी है

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की "राम की शक्ति पूजा" से ली गई है जिसमें सीता मुक्ति के लिए राम के संघर्ष को वर्णित किया गया है।

व्याख्या - राम अपने चरण को आगे बढ़ाते हैं चारों ओर युद्ध की धुन बज रही है। चारों ओर अंधकार हो रहा है। राम जिसे देख के सहम रहे हैं तथा दूर दूर तक पर्वत मालाओं पर नैशान्धकार पड़ा है, पार तक चमकती रोशनी दिख रही है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्यगत सौंदर्य

भाषा - खड़ीबोली
काव्यरूप - लम्बी प्रबंधात्मक कविता
छन्द - हरिगीतिका

विशेष

- बांग्ला की कृत्तिवास रामायण से प्रेरित रचना है
- सीता मुक्ति एक अर्थ में, स्त्री मुक्ति एवं स्वाधीनता की है
- शक्ति की मौलिक कल्पना की गई है।
- विजय होने के लिए, राम के ईश्वरीय स्वरूप से अधिक, स्वाभाविक स्वरूप को उभारा गया है

प्रासंगिकता - वर्तमान समाज के लिए भी उपयोगी बन पड़ी है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'उपालंभ के क्षेत्र में जो अद्‌भुत सफलता सूर को मिली है, शेष कवि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सके हैं।'-क्या सूर का काव्य इस कथन की पुष्टि करता है? विश्लेषणात्मक उत्तर दीजिये। 20

सूरदास भक्तिकाल की कृष्ण काव्यधारा के श्रेष्ठ रचनाकार है जिनकी रचना कृष्ण के सौन्दर्य, गोपियों, राधा के विरह पर केन्द्रित है। कृष्ण भक्ति में पूरे भक्तिकाल में मीराबाई, रहीम को छोड़कर कोई इनका सानी नहीं है

सूरदास ने भ्रमरगीत में उपालंभ का सुन्दर प्रयोग किया, हालांकि इसका प्रयोग अभिज्ञान शाकुन्तलम में कालिदास ने भी किया है किन्तु उपालम्भ को शीर्ष को पहुँचाने का श्रेय सूरदास को दिया जाता है।

उपालंभ श्रृंगार का अर्थ होता है उलाहना देना। गोपियां उलाहना को मुद्रा में तब आती है जब

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उधव उन्हे भक्तिमार्ग छोड़ने को कहता है। सूरदास द्वारा उपालम्भ को निम्न प्रकार से दिखाया गया है।

नगर :- गोपियों को नगर (मथुरा) से भी, ईर्ष्या है क्योंकि वहाँ जाकर कृष्ण उन्हे भूल गये है इसलिये गोपिया नगर पर उलाहना देती हुई कहती है।

"वह मथुरा काजर की कोठरी
जे. आवहि तोऊ बोल"

राजनीति - उद्धव गोपियों को समझाते है कि वह भक्ति, प्रेम का मार्ग त्याग दे, जिससे कुद्ध होकर गोपियाँ उद्धव के इस राजनीतिक क्रियाओं पर व्यंग्य करती हुई कहती है कि तुम राजनीति पढ़ के आये हो,

"हरि हो राजनीति पढि आये"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रकृति - संयोग के समय जो प्रकृति शीतल लगती है वियोग में वही जलती है जिसे देखकर गोपिया प्रकृति को कहती है क्या तुम्हे जरा भी दुख नहीं है कृष्ण के मथुरा जाने का -

"मधुबन तुम क्यों रहत हरे
विरह वियोग श्याम सुन्दर के, ठाढे क्यों न जरे"

कुब्जा - मथुरा में कृष्ण की भेंट कुब्जा से हुई है जैसे ही इस बात का ज्ञान गोपियों को हुआ है यह कुब्जा के प्रति ईर्ष्या भाव से भर उठी है और कहती है।

"उधो जाके माथे भाग
कुब्जा को पटरानी कीन्हो, हमहीं देत बैराग"

निर्गुन - उद्धव गोपियों के मन में निर्गुन ईश्वर को स्थापित करना चाहते है गोपिया उद्धव की मंशा को जानकर सचेत हो जाती है तथा उलाहना की मुद्रा में आती है

" निरगुन कौन देश को बासी"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुरुषप्रधान ढाँचा . गोपियाँ एक अर्थ में मध्यकालीन स्त्री की स्वतंत्रता की बानगी है गोपियाँ मध्यकाल के पुरुष प्रधान ढांचे का नकारती है तथा उद्धव पर व्यंग्य करती हुई कहती है।

"उधो कोकिल कूजित कानन
तुम हमको उपदेश करत हो भस्म लगावन आनन"

सूरदास ने अपने काव्य में उपालम्भ का सुंदर प्रयोग किया तथा उपालम्भ को चरम बिंदु तक पहुँचाया है सूरदास की इसी प्रयोगधर्मिता को देख कर शुक्ल जी ने कहा - "उपालम्भ का ऐसा सुंदर काव्य कोई दूसरा नहीं है"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बिहारी' की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये। 15

बिहारी रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा के श्रेष्ठ कवि है इनकी एकमात्र रचना बिहारी सतसई है जिसमें इन्होंने 713 छन्दों का प्रयोग किया है। इनकी छन्द वैविध्यता, विषय वैविध्यता, भाषा गुण के कारण ही इनके काव्य को "गागर में सागर" की उपाधि दी गई है।

बहुज्ञता का अर्थ होता है विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान होना इस संदर्भ में बिहारी की बहुज्ञता की जांच करते हैं।

ज्योतिष बिहारी को अपने समय में ज्योतिषी की समझ थी जिसका प्रभाव उनके काव्य रचनाक्रम पर भी दिखता है।

"चित पितृमारक जोग गुनि भये सुत सोग"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आडम्बर - अपने समय के आडम्बर पर भी बिहारी व्यंग करते हैं इन्हें आडम्बर में व्याप्त पाखण्ड का ज्ञान था यह कहते हैं-

"जप माला छापा तिलक, सरै न एको काम
मन कांचे नाचे वृथा, सांचे सांचे राम"

राजनीति - बिहारी के काव्य को समाज से कटा हुआ साहित्य माना जाता है किंतु अपनी बहुज्ञता में वह राजनीति को भी शामिल कर लेते हैं तथा राजपाट से गैर जवाबदेह राजा पर व्यंग करते हुए कहते हैं

"नहि पराग, नहि, मधु, मधुर नहि विकास इहि काल
अली कली ही सो बंध्यो आगे कौन हवाल"

पचांग - बिहारी को पचांग का भी पर्याप्त ज्ञान था, उन्हें पत्रा देखना आता है जो उनके काव्य में भी दिखता है

गणित - अपने समय की सामान्य गणितीय समझ बिहारी को थी, जिसका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयोग वह प्रायः अपने काव्य में भी करते हैं।

दर्शन - दर्शन के क्षेत्र में बिहारी को अनेकों दर्शनों का ज्ञान था, किन्तु बिहारी काव्य का प्रयोजन सिर्फ रस में डूबने को मानते थे।

बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं अपनी बहुज्ञता के कारण उनके काव्य में विभिन्न विषयों, दर्शनों का समावेश है साथ ही ब्रजभाषा को अखिल भारतीय भाषा बनाने में भी बिहारी का महत्वपूर्ण योगदान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद के प्रतिनिधि कवि है, इनकी रचना "राम की शक्ति पूजा" अपने अर्थ की दृष्टि से विभिन्न आयामों को खोलती है, जहां निर्मला जैन ने इसे शक्ति की मौलिक कल्पना माना है वहीं रघुनाथ सिंह ने इसे निराला का आत्मसंघर्ष कहा है।

शक्ति पूजा को प्राय: आलोचकों द्वारा शक्ति काव्य भी कहा गया है जिसके निम्न प्रतिमान है।

शक्तिहीनता- कविता की शुरुआत ही शक्तिहीनता के वर्णन से शुरु होती है जहां कवि लिखते है

"रवि हुआ अस्त,
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शक्ति मौलिक कल्पना: यह जीतने के लिये शक्ति की मौलिक कल्पना का सुझाव जामवंत द्वारा दिया गया है। तथा विजयी होने के लिये यह आवश्यक है।

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन
छोड़ दो समर, जब तक सिद्धि न हो रघुनंदन"

शक्ति का आना - शक्ति स्वयं भी युद्ध में उपस्थित है जो रावण से आमंत्रण पा का युद्ध में रावण के पक्ष से उतरी है

"उतरी महाशक्ति पा रावण से आमन्त्रण"

शक्ति नैतिकता संबंध - दिखाया गया है शक्ति ने रावण को गोद में छिपाया जबकी राम के मुहँ में लीन हुई है जो यह दिखाता है कि शक्ति का अनैतिकता से गहरी संबंध होता है जबकि ~~अब~~

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

नैतिकता से आन्तरिक

"यदि रावण अनैतिक होकर भी का सका शक्त तो निश्चय तुम हो सिद्ध, करोगे उसे ध्वस्त"

शक्ति के प्रति प्रतिबद्ध शक्ति पाने के लिये राम अपने नेत्र भी देने को तैयार हो जाते है।

~~दो पुष्पकमल है शेष~~

" दो नीलकमल है शेष, यह पुरश्चरण पूरा करता हूं देकर मात एक नयन"

इस प्रक्रिया राम की शक्ति पूजा में शुरू से अन्त तक शक्ति को दिखाया गया है जिस कारण इसे शक्तिकाव्य भी माना जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की भक्ति-भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 20

कबीर भक्तिकाल की सन्तकाव्यधारा के कवि हैं जिनका चरित्र बहुआयामी है तथा क्रांतिकारी चेतना के सबल कवि है कबीर का मूल व्यक्तित्व भक्त है क्योंकि वह पूरी तन्मयता के साथ भक्ति करते है।

"मन मस्त हुआ तब क्यों बोले
मेरा साहब है घट माहि बाहर नैन क्यों खोले"

कबीर की भक्ति का स्वरूप उनके चरित्र की ही तरह बहुआयामी है उन्होंने अपने धर्मों, दर्शनों एवं साधना पद्धतियों का समावेश किया है, ~~स्वक~~ उन्होंने योग से लेकर ज्ञान तक, अद्वैत, से सूफीवाद तक भक्ति को स्वीकार किया है किन्तु कबीर निर्गुण भक्ति करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अद्वैतवादी - शंकराचार्य के अद्वैतवाद दर्शन का प्रभाव भी कबीर की भक्ति पर पड़ता है जहाँ वे अपने आराध्य से एकत्व स्थापित करते हैं।

"जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहि
प्रेम गली अति सांकरी, जा मैं दो न समाहि।"

नाथ:- नाथों की साधना पद्धति से भी कबीर ने भक्ति की है जहाँ वे कहते हैं-

"अवधू गगन मंडल घर कीजै"

सूफीवादी भावनात्मक पद्धति - कबीर पर सूफीवादी भावनात्मक रहस्यवाद का भी प्रभाव पड़ा है जो भावनाओं के स्तर पर एकत्व स्थापित करते हैं।

"नैनों की करी कोठरी, पुतली पलंग बिछाय
पलकों की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाय"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

दास्य भक्ति - कबीर तुलसी की तरह दास्य भक्ति भी करते हैं जहां वे स्वयं में ईश्वर में स्वामी दास का संबंध स्थापित करते हैं।

"मैं तो कूता राम का मुतिया मेरा नाऊँ
गले राम की जेवड़ी जित खैंचे तित जाऊँ"

आत्मनिवेदन मूलक भक्ति - जब कबीर सब कुछ ईश्वर पर न्यौछावर करने को तैयार हो जाते हैं तब आत्मनिवेदन मूलक भक्ति करते हैं।

"मेरा मुझमें कुछ नाहि, जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर"

निर्गुण भक्ति / वैष्णव प्रभाव:- कबीर ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना की है किन्तु है भक्ति को सर्वजन सुलभ बनाने के लिए उन्होंने रामानंद से राम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राम का नाम लिया है किन्तु कबीर के
राम तुलसी के राम नहीं है।

"ना दशरथ घरि औतरि आवा, ना लंका का राव सतावा"

वैष्णव प्रभाव - जहाँ कबीर राम नाम
कहते है प्रायः वहा इनपर
वैष्णव प्रभाव दिखता है।

"राम नाम के पटतरे, देबे को कछु नाहि"

कबीरदास दास की
भक्तिभावना का स्वरूप बहुआयामी है इसी
इसी व्यक्तित्व के कारण कबीर हिन्दू
मुस्लिम समन्वय को साध सके है तथा
इनकी भक्ति दो धर्मों के लिए स्वीकार्य
हुई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कामायनी जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित हिन्दी
का एकमात्र भावप्रधान महाकाव्य है जिसकी
रचना 1936 में हुई थी। डॉ० नगेन्द्र
ने "कामायनी के अध्ययन की समस्याएं" में
आधुनिक मानदण्डों को गढा है जिसके आधार
पर महाकाव्यत्व का निर्धारण करेंगे।

उदात्त कार्य - उदात्त कार्य अर्थात रचना
में कवि द्वारा किए कार्य
को दर्शाया गया है क्या वह कार्य समाज
हित में है कामायनी में इच्छा, क्रिया व
ज्ञान के बीच समरसता स्थापित करने की
जिससे मनुष्य जीवन में आनन्द को
प्राप्त कर सकता है।

"समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था
चेतना एक विलसती, आनन्द अखण्ड घना था"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कार्य को उदात्त माना जा सकता है।

उदात्त चरित्र - मनु शुरू दौर में उदात्त नहीं है किन्तु अन्त में उदात्तता को धारण करता है, मनु विकासशील चरित्र है ऐसे चरित्र की पहचान अन्तिम पड़ाव पर ही होती है। अतः उदात्त माना जा सकता है

उदात्त रस - रस में शृंगार, शांत, वीर अंगीरस होते हैं किन्तु कामायनी में आनन्दमूलक शांत रस है जो शैवाद्वैतवाद, एवं प्रत्यभिज्ञा दर्शन से उत्पन्न हुआ है यह रस उदात्त है।

उदात्त कथानक - कथानक में घटनाओं का वर्णन होता है किन्तु कामायनी में घटनाएं उतनी नहीं है जितनी पृथ्वीराजरासो में थी, क्योंकि कह को पर्याप्त तीव्रता है उदात्त के स्तर पर थोड़ा कम माना जाता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उदात्त शैली - शैली उदात्त है जयशंकर प्रसाद शैली के प्रति सजग कवि है

इसमें, प्रतीक, बिंब, (उपालक्षित, लक्षित) एवं अलंकारों का सुन्दर प्रयोग है। उपालक्षित बिंब इस प्रकार है

"कामायनी कुसुम वसुधा पर पड़ी, न वह मकरन्द रहा"

कामायनी में उदात्तता के गुण हैं किन्तु घटनाएं कम है तथा भावनाओं की तीव्रता अधिक है। इस आधार पर कामायनी को उदात्त शैली, रस वाला भावप्रधान महाकाव्य माना जा सकता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते है। क्या निराला की यह विशेषता राम की शक्तिपूजा में भी दृष्टिगत होती है? विवेचन करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावादी कवि है जिनकी रचना "राम की शक्ति पूजा" प्रसिद्ध है। जिसमें निराला ने एक ही कहानी में अनेकों अर्थ को भर दिया है।

निराला अपने समय के अनुसार काव्य रचना करते हैं तथा ढाल डालते है

प्रसंग का चयन - राम की शक्ति पूजा पौराणिक आख्यान पर रचित बांग्ला के कृत्तिवास रामायण से प्रेरित है जिसमें सीता मुक्ति को मुख्य बिन्दु बनाकर कथा रची गई है। किन्तु दौर स्वाधीनता आन्दोलन का भी था जब भारतीय पराधीनता के शिकार थे एवं ब्रिटिशों से मुक्ति के लिए प्रयासरत थे इस संदर्भ में राम शक्ति पूजा, सिर्फ राम की पूजा न रहकर, भारत के स्वाधीनता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

संग्राम की शक्ति पूजा बन जाती है।

प्रसंग का विस्तार - विस्तार में निराला ने सीता की मुक्ति में आने वाली बाधाओं, पीड़ाओं, आत्माधिक्कार को दिखाया है जिसमें एक बार तो विजय की भावना ही समाप्त हो जाती है यह तत्कालीन समाज में, असहयोग आन्दोलन एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन के फेल होने के दौर में समझ सकते हैं। अर्थात् प्रसंग अपने विस्तार के साथ, अपने समय से और गहराई से जुड़ता जाता है।

प्रसंग की व्याख्या - व्याख्या में निराला ने ने शक्ति को एक निराशा से आशा की ओर की कहानी बनायी हैं हारे हुए में जीत की भावना का संचार किया है। यही स्थिति देखो तो तत्कालीन स्वाधीनता संघर्ष से जुड़ती है तथा हारे हुए के जीत की अभिलाषा भरती है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्त में राम का अपने नेत्र को निकाल देने का प्रसंग 1942 के करो या मरो के समान प्रतीत होता है।

निराला ने अपनी समय की समस्या को पौराणिक रूप देकर उसे सर्वकालिक बनाया है हालांकि यह एकमात्र अर्थ नहीं है अन्य अर्थों में शक्ति पूजा, निराला का आत्मसंघर्ष-जैसा रघुनाथ सिंह ने कहा, या सीता शक्ति के प्रतीकात्मक अर्थ को भी ग्रहण करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास की 'रामराज्य की परिकल्पना' पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'प्रगतिवादी जीवनमूल्यों में आस्था रखते हुए भी मुक्तिबोध 'लकीर के फकीर' नहीं हैं और अनुभवजन्य यथार्थ पर अधिक यकीन रखते हैं।' ब्रह्मराक्षस कविता के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।

इक नारी लहि संगु, रसमम किय लोचन-जगत॥

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ प्रसंग - प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के शिखर कवि बिहारी का है जिनकी एकमात्र कृति बिहारी सतसई है है जिसमें नारी के प्रति बिहारी चर्चा करते हैं।

व्याख्या - बिहारी कहते हैं मुख पर सुन्दर बिन्दी है तथा सारी हैं पहने हैं। एक नारी के साथ से ही व्यक्ति रस में डूब सकते है अतः व्यक्ति के जीवन में एक नारी का होना जरुरी है जो हमारे जीवन को सार्थक बना सके अतः हमें स्त्री प्रेम करना चाहिए तभी हम रस में डूब सकते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

काव्यगत सौंदर्य

भाषा - परिनिष्ठित ब्रजभाषा
काव्यरूप - मुक्तक
छन्द - दोहा
रस - श्रृंगार

विशेष

•) बिहारी रस में डूबने को ही जीवन का सार्थकता मानते है कहते हैं
"तंत्रीनाद कवित रस, सरस राग रति रंग
अनबूडे बूडे तिरे, जे बूडे सब अंग"

•) श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हुई है
•) कहीं-कहीं अश्लीलत्व दोष भी दिखता है

प्रासंगिकता - बिहारी रस के महत्व के साथ ही ब्रजभाषा के विकास में विशेष योगदान दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल की प्रेमाश्रय काव्यधारा के शीर्ष रचनाकार मलिक मोहम्मद जायसी की है जो 'पद्मावती' के 'नागमती विरह' से ली गई है जिसमें बारहमासा वर्णन किया गया है

व्याख्या - नागमती विरह में चूर हो, तड़प रही है कह रही है भादों का महीना भी आ गया है तथा रात सब ओर अंधेरे वाली होने लगी है, जो मुझे सर्प की तरह डसती है और मैं अपनी अधीर पड़ी रहती हूँ। रात को बिजली की चमक से मेरा तन सिहर उठता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हे नाथ आप अब तो वापिस आ जाइये।

काव्यगत सौंदर्य

भाषा → ठेठ अवधी

अलंकार - अतिशयोक्ति, [illegible]

कड़वक शैली

काव्यरूप- प्रबंधकाव्य

श्रृंगार - वियोग, विरह

विशेष

- नागमती के विरह का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है - शुक्ल ने भी कहा है नागमती का विरह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।
- मध्यकालीन नारी की लालसा, पुरुष आश्रिता को प्रस्तुत किया है।
- स्त्री के साधारणीकरण रूप को दिखाता है

प्रासंगिक - जायसी जी ने नागमती विरह के वर्णन के साथ ही अवधी के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहउँ हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संदर्भ/प्रसंग - उपर्युक्त पंक्ति रामकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास की सर्वोत्कृष्ट रचना रामचरितमानस के "सुन्दरकाण्ड" से ली गई है। जिसमें विभीषण द्वारा रावण को समझाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

व्याख्या - विभीषण अपने भाई रावण के पास जाके उसे समझाने का प्रयास कर रहा है कह रहा है जानकी को राम को लौटा दो वरना कुछ भी नहीं बचेगा युद्ध में सब समाप्त हो जायेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा इससे कुल की मर्यादा भी भंग हो रही है

काव्य सौंदर्य

भाषा → अवधी

छन्द → दोहा, चौपाई

काव्यरूप → प्रबंधकाव्य

अलंकार → अनुप्रास, यमक

विशेष

•) वैष्णवकाव्य पर रचित सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है

•) छोटे भाई द्वारा बड़े को समझाना, पारिवारिक आदर्श दिखाया गया है

•) स्त्री की स्वतंत्रता के रूप में सीता को छोड़ने की बात कर रहे हैं विभीषण।

प्रासंगिकता - छोटे-बड़े भाई के बीच सौहार्द्र साथ ही महिलाओं के प्रति संवेदनशील होने की प्रेरणा देती हुई पंक्ति है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

संदर्भ/प्रसंग - दी गई पंक्तियाँ प्रयोगशील कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना "कुकुरमुत्ता" से ली गई है जिसमें साधारण को महत्व देते हुए, गुलाब पर व्यंग्य किया जा रहा है

व्याख्या - कुकुरमुत्ता सर्वहारा एवं शोषित वर्ग का प्रतीक है जो गुलाब पर तंज कस रहा है कि तूने बड़े-बड़े राजा महाराजे को अपने अधीन किया है जिसने भी तुझे हाथ लगाया है वह पीछे की ओर भागा है, औरत भी तुझे ही पसंद करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्यगत सौंदर्य

भाषा - ओज भरी बोली
लोकोक्ति-मुहावरा प्रयोग - पैर तले रजकण....
छन्द - छूट गया है
गेयता बची है।

विशेष

•) साधारण को महत्व देते हुए, सुन्दर व्यंग्य किया गया है
•) मार्क्सवाद का सीमित प्रभाव दिखता है किंतु वर्ग संघर्ष की चेतना नहीं दिखती
•) सर्वहारा वर्ग के प्रतीक के रूप में कविता की केन्द्रीय संवेदना वंचित वर्ग है

प्रासंगिक - कुकुरमुत्ता सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधि है जो पूंजीवादी को पर तंज कसा रहा है वर्तमान में भी पूंजीवाद एवं पश्चिमीकरण बढ़ रहा है यह पंक्ति अंधाधुनीकरण से बचाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ मनोविश्लेषवादी, रोमानियत के कवि 'अज्ञेय' द्वारा रचित "असाध्य वीणा" से ली गई है जिसमें जापानी मिथक को लिया गया है।

व्याख्या - वीणा को कोई नहीं बजा पाता है तब राजा प्रियंवद को बुलाते हैं। राजा कह रहे हैं मेरे सभी कलाकारों ने प्रयास किया असफल रहे, कोई भी इसे साध न सका है, जबसे बनी है तबसे मूक ही है लेकिन मुझे विश्वास है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जब कोई सच्चा कलाकार, अहंकार शून्य होके उसे गोद में लेगा तब यह बज उठेगी.

काव्यगत सौंदर्य

भाषा – खड़ीबोली
काव्यरूप – लम्बी कविता
छन्द छूट गया है
गेयता बची है

विशेष

- जापानी मिथक पर आधारित है
- मूल रूप से अहंकार शून्यता ही वीणा बजाने वाले की अर्हता होगी।
- प्रतीकात्मक अर्थ में यह स्वर से मौन, मौन से स्वर की यात्रा की कहानी है

प्रासंगिकता – आज के अहंकार वादी समाज को अहंकार हीनता की प्रेरणा देती हुई पंक्ति है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी की काव्य-वस्तु का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूर का भ्रमरगीत नागर-संस्कृति के बरक्श लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा करता है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मुक्तिबोध परंपराभंजक अनगढ़ काव्यभाषा के कवि हैं।' 'ब्रह्मराक्षस' कविता के आधार पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीरदास अपने क्रांतिकारी चेतना के कारण हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान रखते हैं तथा उन्होंने अपने समय की विद्रूपताओं पर तंज कसा तथा समतामूलक समाज की परिकल्पना तैयार की जिसके आधार पर यह कहा जाता है, जैसा कबीर का जनसामान्य के प्रति सरोकार है वैसा किसी और का नहीं।

हालांकि यह पूर्ण रूप से सही नहीं है क्योंकि कबीर से इतर अलग तुलसी एवं नागार्जुन जैसे कवि हैं जो जनसामान्य के उद्धार के सांस्कृतिक रचना रचते हैं। जैसे तुलसीदास ने भी अपने समय की जातिवादी आडंबरों का विरोध किया है।

"मेरी जाति न चाहूं, काहू की जाति पाति"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

नागार्जुन भी अपने समय की विद्रूपताओं पर कबीर की भाँति बिना डरे व्यंग्य करते है। "क्या है दक्षिण क्या है वाम जनता को रोटी से काम"

हालांकि कबीर ने जो जनसामान्य पर आलोचना कहा वह अद्वितीय है जैसे-

आडम्बर विरोध - कबीर ने अपने समय में व्याप्त आडम्बरों का विरोध किया है।

"मूंड मुंडाये हरि मिले, हर कोई लेय मुंडाय बार-बार मुंडते, भेड़ न बैकुण्ठ जाये"

साम्प्रदायिकता - वर्तमान समय में साम्प्रदायिकता व्याप्त है कबीर ने अपने समय पर मुल्लों एवं पण्डो दोनों पर फटकार लगाई थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"अरे इन दोउन राह न पाई हिन्दू की हिन्दुआई देखी, तुरकन की तुरकाई"

जातिवाद - कबीर ने स्वयं जातीय दंश सेला था जिस कारण वे जातिवाद के प्रति आक्रामक मुद्रा में रहते है।

"जाँति पाँति पूँछे नहीं कोई हरि को भजे, सो हरि का होई"

नारी:- कबीर के नारी के प्रति नजरिये पर प्रश्नचिह्न लगाया जाता है किन्तु कबीर नारी के माया रूप का खण्डन करते है माया मात्र का नही-

"पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप पतिव्रता के रूप पर वारौ कोटि सरूप"

~~[illegible]~~ जीवदया - कबीर ने अपने समय से आगे बढ़ते हुए प्राणी मात्र के साथ जीवों पर भी दया करने की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेरणा दी है-

"साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय"

कबीर ने सम्पूर्ण जीवन काल में समाज हित में ही काव्य रचा है इसलिये यह कहा जा सकता है कि तुलसी, नागार्जुन जैसे कुछ कवियों को छोड़कर आज तक कबीरदास का कोई सानी नहीं है जिनके काव्य में वंचित के प्रति सहानुभूति हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भारत-भारती में निहित नवजागरण-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

1912 में रचित भारत भारती- मैथिलीशरण गुप्त की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसके आधार पर गुप्त जी को राष्ट्रकवि कहा जाता है भारत-भारती एक महत्वपूर्ण पक्ष इसकी नवजागरण चेतना है।

नवजागरण का अर्थ होता है नये तरीके से जागना, भारत-भारती में गुप्त जी ने ~~वर्तमान~~ प्राचीन के गौरव को दिखाकर वर्तमान पर कटाक्ष किया है ताकि सोये हुये को जगाया जा सके।

अतीत का गौरव पूर्ण वर्णन- नवजागरण की अनिवार्य विशेषता होती है

"सब से पहले हमहीं ने ज्ञान शिक्षा दान की आचार की व्यापार की, व्यवहार की विज्ञान की।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

~~वर्तमान पीढ़ी बीच~~

पिछड़ने का कारण - नवजागरण में अपने काव्य में पिछड़े रहने का कारण तथा आगे की दिशा दिखाई जाती है।

"हम क्या थे क्या हो गये हैं क्या होंगे अभी
आओ मिलकर विचारें ये समस्याएं सभी"

वैज्ञानिकता समर्थन - वैज्ञानिकता के माध्यम से वर्तमान के उद्धार करने पर बल दिया जाता है।

"अब तो उठो हे बंधुओ निज देश की जय बोलदो
बनने लगे सब वस्तुएं, कल कारखाने खोलदो"

शिक्षा :- शिक्षा को पर्याप्त महत्व दिया है किन्तु साम्प्रदायिक शिक्षा पर तंज कसा गया है तथा अपनी परम्परागत नैतिक शिक्षाओं पर बल दिया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"वह साम्प्रदायिक शिक्षा हमारे सर्वथा प्रतिकूल है
हममें हमारे देश के प्रति द्वेष भरने की भूल है"

साहित्य कर्तव्य - नवजागरण के साथ ही गुप्त जी ने कवियों को भी समाज के प्रति प्रतिबद्ध रहने की सलाह दी है।

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"

भारत-भारती अपनी संवेदना में नवजागरण का काव्य है। इसी संवेदना के कारण गुप्त राष्ट्रकवि है तथा इसे ~~आर~~ उमाशंकर जोशी ने- आधुनिक समय की गीता कहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नागार्जुन मार्क्सवादी रचनाकार है तथा इन्हे आधुनिक कबीर की संज्ञा दी जाती है क्योंकि कबीर की ही तरह नागार्जुन अपने अपने साहित्य में सामान्य जनजीवन की समस्याओं को उठाते है।

जनसामान्य को सहज भावनाओं को दिखाना नागार्जुन की अनोखी विशेषता है इन्होंने रिक्शा चालक, फल, गरीब, दलित (हरिजनगाथा) पर सब पर लिखा है।

सहज भावना - जिसमें प्रकृति भी रहती है। मनुष्य - प्रकृति सहसंबंध दिखाते है।

"कई दिनों तक लगी भित्त पर छिपकली की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

नागार्जुन ने बेलछी काण्ड से आहत होकर हरिजन गाथा लिखी तथा दलितों की समस्या एवं शोषण को उजागर किया

"ऐसा तो कभी नहीं हुआ था
एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं
तेरह के तेरह अभागे"

साथ ही नागार्जुन अपने समय की राजनीति पर भी व्यंग्य करते है तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पर लिखते है -

"हरिजन गिरिजन भूखे मरते
हम डोले वन-वन में,
तुम रेशम की साड़ी पहने
उड़ती फिरो गगन में"

लोकतंत्र के धनतंत्र में बदलने पर व्यंग्य करते है दिखाते है कि कैसे लोकतंत्र सिर्फ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पैसे वालों का तंत्र है।

"दिल्ली से आये हैं टिकट मार के
मापे तीन बाहर के"

नागार्जुन किसी विचारधारा मे नहीं पड़ते सजह, सामान्य बात करते हैं जनता की बात करते हैं।

"क्या है दक्षिण, क्या है वाम जनता
को रोटी से काम"

नागार्जुन आधुनिक समय के कवि है तथा ~~स्वरूप~~ पर नागार्जुन ऐसे कवि हैं जिनकी पहुँच किसानों की चौपाल से लेके कवियों को संगोष्ठि तक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation